HH PUJYA SWAMI CHIDANAND SARASWATI JI MAHARAJ

Chief Guest at Jamnalal Bajaj Awards 2025 Ceremony

Born: June 3

Pujya Swami Chidanand Saraswati Ji's main motto in life is "to serve God and humanity". He received the blessings of his Sadguru at the tender age of eight, and after a year of maun sadhana (silent meditation) in his young age, he practiced maun (silence) and meditation in the Himalayas. Pujya Swami Ji received education in Sanskrit and philosophy. He possesses an extraordinary ability to express his thoughts in multiple languages.

Unity, harmony, and an unwavering faith in following the divine path - are the foundational pillars of Pujya Swami Ji's education and knowledge. In this field, he has also led various conferences, inter-faith gatherings, and religious parliaments, some of which were held at the Parliament of World Religions, the Millennium World Peace Summit at the United Nations, the World Economic Forum, and the Parliament of All Religions, as well as he has represented specially on significant platforms of numerous religions. Swami Ji is also the pioneer of various peace walks organized around the world.

As a spiritual leader and as an inspiration, Pujya Swami Ji, the Supreme Head of Parmarth Niketan Ashram, Rishikesh, is the founder of the Ganga Action Family, and the co-founder of the Global Interfaith Wash Alliance. Parmarth Niketan is a prominent and renowned religious institution in India. Under his divine inspiration and leadership, Parmarth Niketan has become a sacred place known throughout the world for its spirituality, yogic practices, meditation, beauty, serenity, divine grace and environment. Swami Ji has transformed the humanitarian activities conducted by Parmarth Niketan into a multifaceted one. Now, the Ashram is not only a spiritual pilgrimage site, but also provides education, training, and health care to those in need.

Swami Chidanand Saraswati Ji is the founder and spiritual head of the first Hindu-Jain temple established in America. He is the source of inspiration for many temples located in America, Canada, Europe, Africa, and Australia.

Pujya Swami Ji believes that youth are the future of the country. His influence and blessings can be seen in the youths who meet him, which has changed the direction of their future. Young people from all over the world come to Parmarth Niketan and receive guidance. Being the founder of the Indian Culture Research Foundation, he has led the compilation and publishing of 11 volumes of the Hindu Dharma Kosh.

Pujya Swami Ji is also the founder of the Divine Shakti Foundation, which is dedicated to utilizing the energy, power, and abilities of women. It helps and supports the education of abandoned and orphaned boys and girls, widows, and poor women.

Towards his contribution to mother nature – the divine Water, Pujya Swami Ji founded the Ganga Action Family. It is a worldwide family of scientists, engineers, experts, volunteers and devotees, committed to making the waters of Mother Ganga clean and uninterrupted.

Awards and Honors: Pujya Swami Ji has received numerous national & international awards & recognitions, for his humanitarian work as a spiritual leader. Some of these are:

- Mahatma Gandhi Humanitarian Award
- Best Citizen of India Award

- Mahatma Gandhi Lifetime Peace and Service Award
- Bharat Kirtiman Alankaran Award by the World Book of Records, London, UK
- Uttaranchal Ratna
- First Excellence Award
- Devarshi Award
- Patron of the Russian Indian Heritage Research Foundation, Moscow
- Patron of the Centre for Religious Experience in Oxford, UK

Thousands of devotees from America, Europe, Australia, and throughout India are drawn to sit in his presence and have darshan. For him, travel is a testament to the priceless gift of Satsang. He travels the world over to spread knowledge, inspiration, salvation, and the light of divine existence throughout the world.

As a true Sanyasi of eternal truth, these honors and awards have no impact on Swami Ji's personality. He has renounced everything and, as a holy child of God, Swami Ji lives a life of renunciation, remaining completely detached.

परम पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी महाराज
मुख्य अतिथि जमनालाल बजाज पुरस्कार –2025

जन्म: जुन 3

पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी के जीवन का मुख्य आदर्श ''ईश्वर व मानवता की सेवा में है.'' मात्र आठ वर्ष की अल्पायु में ही सद्गुरु की कृपा प्राप्त हुई. ईश्वर की महिमा का अंत:करण में एहसास होने के बाद, स्वामी जी ने ईश्वर व मानवता के प्रति समर्पित जीवन प्रारम्भ किया. अपनी युवा अवस्था में एक वर्ष मौन साधना के पश्चात हिमालय में मौन व ध्यान साधना की. पूज्य स्वामी जी ने संस्कृत व दर्शन शास्त्र में शिक्षा प्राप्त की. अनेक भाषाओं में विचार व्यक्त करने की क्षमता उनमें अद्भुत है.

एकता, सद्भाव एवं ईश्वरीय मार्ग पर चलने की अटूट आस्था पूज्य स्वामी जी के शिक्षा व ज्ञान की बुनियादी ईंटें हैं. इस क्षेत्र में विभिन्न सम्मेलनों, अंतर–धार्मिक सभाओं एवं धार्मिक संसदों का नेतृत्व भी किया है, जिसमें प्रमुख हैं– पार्लियामेण्ट ऑफ वर्ल्ड रिलिजन, मिलेनियम वर्ल्ड पीस सम्मिट एट युनाइटेड नेशन्स, वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम, सर्व धर्म संसद आदि अनेकों धर्मों के विशाल मंचों पर विशेष प्रतिनिधित्व किया. स्वामी जी दुनिया भर में आयोजित होने वाली विभिन्न शान्ति–यात्राओं के अग्रदूत भी हैं.

एक आध्यात्मिक धर्मगुरू एवं एक प्रेरणा के रूप में पूज्य स्वामी जी परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश के परमाध्यक्ष, गंगा एक्शन परिवार के प्रणेता एवं ग्लोबल इण्टर फेथ वाश एलायंस के सह–संस्थापक अध्यक्ष हैं. परमार्थ निकेतन भारत की प्रमुख एवं विख्यात धार्मिक संस्था है. उन की दिव्य प्रेरणा एवं नेतृत्व में परमार्थ निकेतन ऐसा पुण्य स्थल बन चुका है जिसे सम्पूर्ण दुनिया में आध्यात्मिक, योगाभ्यास, ध्यान, रमणीयता, सुरम्यता, शान्ति, ईश्वरीय कृपा एवं दिव्यता के परिवेश के लिए जाना जाता है. पूज्य स्वामी जी ने परमार्थ निकेतन द्वारा संचालित मानवीय गतिविधियों को बहुमुखी बना दिया है. अब आश्रम मात्र आध्यात्मिक पुण्य–स्थल ही नहीं है, अपितु यहाँ ज़रूरतमंद लोगों को शिक्षण, प्रशिक्षण व स्वास्थ्य संरक्षण का ज्ञान भी प्रदान किया जाता है.

स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी अमेरिका में स्थापित प्रथम हिन्दू–जैन मन्दिर के संस्थापक व आध्यात्मिक प्रमुख हैं. अमेरिका, कनाडा, यूरोप, अफ्रीका एवं ऑस्ट्रेलिया में स्थित अनेक मन्दिरों के प्रेरणा स्रोत पूज्य स्वामी जी रहे हैं.

पूज्य स्वामीजी का मानना है कि युवा देश का भविष्य हैं. जो युवा उनके सम्पर्क में आते हैं, उन पर उनका प्रभाव व आशीर्वाद देखा जा सकता है, जो कि उनके भविष्य की दिशा बदल देता है. पूरे विश्व से युवा परमार्थ निकेतन आते हैं और मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं.

स्वामी जी ''भारतीय संस्कृति शोध प्रतिष्ठान'' के संस्थापक हैं. पूज्य स्वामी जी के मार्गदर्शन में इस प्रतिष्ठान द्वारा 'हिन्दू धर्म कोश' के ११ खण्डों में संकलन एवं प्रकाशन किया गया है.

पूज्य स्वामी जी 'डिवाइन शक्ति फाउण्डेशन' के संस्थापक हैं, जो नारियों की ऊर्जा, शक्ति व योग्यता के उपयोग हेतु समर्पित है. यह परित्यक्त, अनाथ बालक व बालिकाओं, विधवाओं व गरीब महिलाओं की सहायता एवं शिक्षा में उनका सहयोग करता है.

प्रकृति माँ – जल – के प्रति अपने योगदान के लिए पूज्य स्वामी जी ने गंगा एक्शन परिवार की स्थापना की. यह वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, विशेषज्ञों, स्वयंसेवकों एवं भक्तों का विश्व व्यापी परिवार है, जो माँ गंगा के जल को निर्मल व अविरल बनाने के लिए प्रतिबद्ध है.

पुरस्कार एवं सम्मान– आध्यात्मिक नेता की भूमिका के रूप में उनके मानवतावादी कार्यों के लिए पूज्य स्वामी जी को अनेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं:

- महात्मा गांधी ह्यूमैनिटैरियन एवॉर्ड
- बेस्ट सिटिजन ऑफ इंडिया एवार्ड

- महात्मा गांधी लाइफ टाइम पीस एंड सर्विस एवार्ड
- वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स लंदन, यूके द्वारा ''भारत कीर्तिमान अलंकरण'' पुरस्कार
- उत्तरांचल रत्न
- प्रथम उत्कृष्ट एवॉर्ड
- देवर्षि अवॉर्ड
- पैट्रन ऑफ द रशियन इण्डियन हेरिटेज रिसर्च फाउण्डेशन मास्को
- पैट्रन ऑफ द सेन्टर फॉर रिलिजियस एक्सपीरियन्स इन ऑक्सफोर्ड यूके

अमेरिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया और सम्पूर्ण भारत से हज़ारों श्रद्धालु उनके सानिध्य में बैठने व दर्शन हेतु खिंचे चले आते हैं. उनके लिए यात्रा सत्संग रूपी अमूल्य उपहार का मूल्य है. सारी दुनिया की वे यात्रा करते हैं ताकि ज्ञान, प्रेरणा, उद्धार एवं ईश्वरीय अस्तित्व के प्रकाश का सम्पूर्ण दुनिया में विस्तृत प्रसार कर सकें.

सनातन सत्य के सच्चे संन्यासी के रूप में इन सम्मानों व पुरस्कारों का प्रभाव स्वामी जी के व्यक्तित्व पर बिलकुल नहीं पड़ा; इनके प्रभाव से वे पूर्णतया निर्लिप्त रहकर ईश्वर के पवित्र बालक रूप में सब कुछ त्याग कर संन्यास का जीवन जी रहे हैं.